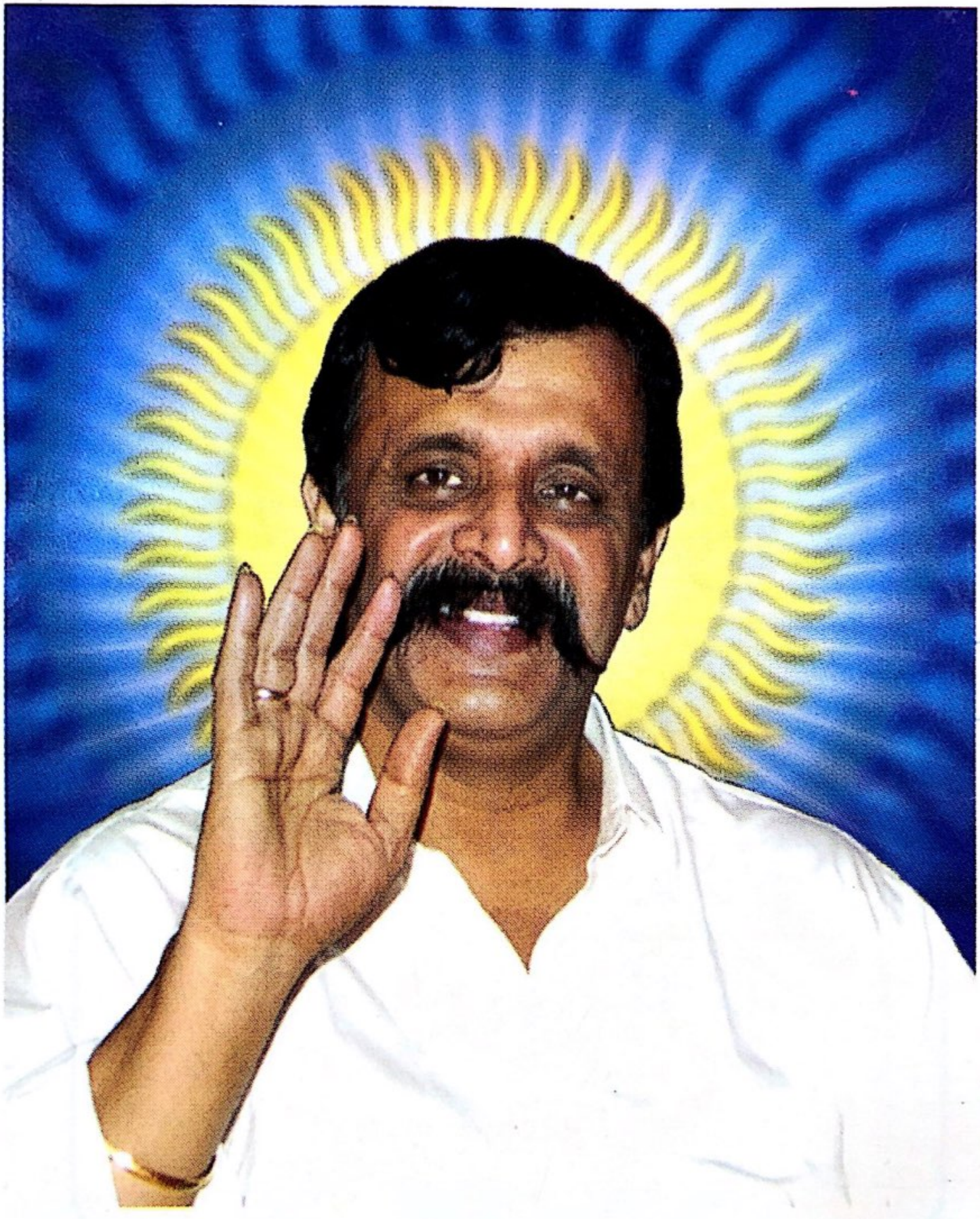

श्रीअनिरुद्ध चलीसा

Scanned with CamScanner

॥ हरि ॐ ॥

श्रीअनिरुद्ध चलीसा

Scanned with CamScanner

दोहा

श्रीसद्गुरुसुमिरनबल
सब कछु करत सुहाई ।
अनिरुद्ध नाम की रटन लगाई
टूट गई दुख की डोरी ॥

Scanned with CamScanner

जय अनिरुद्ध पूरण अवतारा ।
जय गोविंद परमसुखधामा ॥१॥
जय नंदारमणा बलवंता ।
रं रं रं रं जय अभिरामा ॥२॥

रात दिवस अनिरुध धुन गाँऊ ।
साथ में लायो सुचितसो दाऊ ॥३॥
सब रिषिजन मिल जपत महेशु ।
गोपगोपीजन गात रमेशु ॥४॥

Scanned with CamScanner

कार्तिकमास की पूरणमासी ।
प्रगट भयो जै जै त्रिपुरारि ॥५॥
पूरणशक्ति सर्बसुखखानी ।
दयाकृपाकर बल का दानी ॥६॥

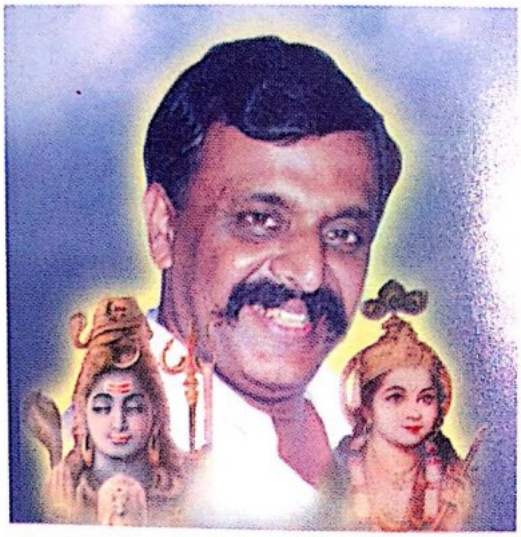

गोपिनाथजी दर्शन पावत ।
श्रीविठ्ठल के चरणा लागत ॥७॥
स्वामीकृपा से जप रट चालत ।
बंश तुम्हारे है प्रभु आवत ॥८॥

Scanned with CamScanner

पाय आशिषा वृद्ध अपारा।
कहत कहानी निजकुलदारा ॥९॥
कुल अपने है विठ्ठल आवत।
निरगुण से जब सगुण प्रकाशत ॥१०॥

श्यामल रूप मुनिजन सेवि।
द्वार खडै नौ निधी की देवि ॥११॥
भाल चंद्रमा सोभत नीका।
सहस सूरज परभा हो फीका ॥१२॥

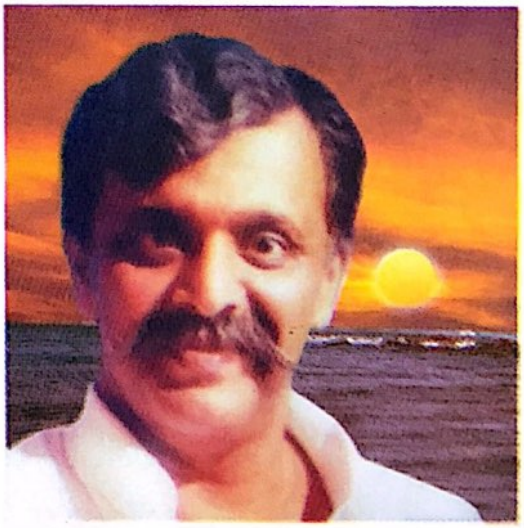

Scanned with CamScanner

भगत ने जबहि नाम पुकारा ।
तबहि बापू दुःख निवारा ॥१३॥
क्रिपा महान तुमसम नाही ।
राजा रंक भेद नहीं पाई ॥१४॥

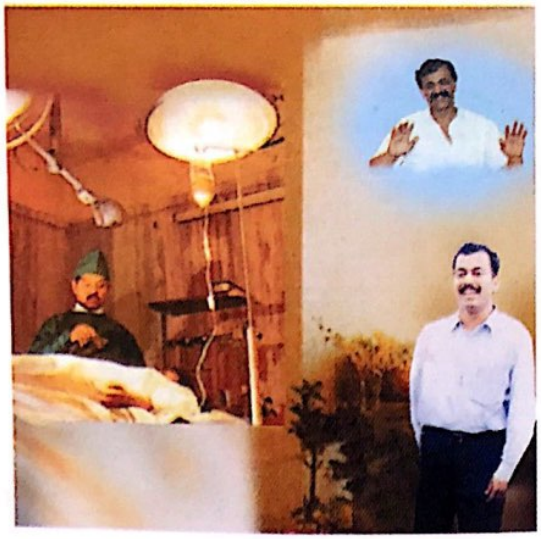

साईनिवास में परगट ग्वाला ।
हेमाड्या की अंतिम ज्वाला ॥१५॥
पूजन मीनाभाभी कीन्हा ।
सद्गुरुरूप में दरसन दीन्हा ॥१६॥

Scanned with CamScanner

सुरगणसहित इंद्र करी वंदन ।
भवभयनाशन खलदलमर्दन ॥१७॥
सूरजवंशी राम धराधर ।
चक्रपाणि हरि सद्‌गुण आगर ॥१८॥

नाम की सेज प्यार की माला।
ऱ्हिदय सिंहासन बसत अकाला ॥१९॥
पुरुषार्था कलजुग भूल जाई।
जुईगाँव बस काज दिखाई ॥२०॥

Scanned with CamScanner

पंचपुरुष श्रद्धा बतलाई ।
धरमचक्र रख शुरु लडाई ॥२१॥
भारतवास की गौ जो माता ।
तुम बन खडे गौ के त्राता ॥२२॥

नाश अधर्मा पालन धर्मा ।
यही कारण अवतारण वर्मा ॥२३॥
धरम ते भगति, जोग ही नामा ।
ज्ञान ते दर्शन अनिरुधधामा ॥२४॥

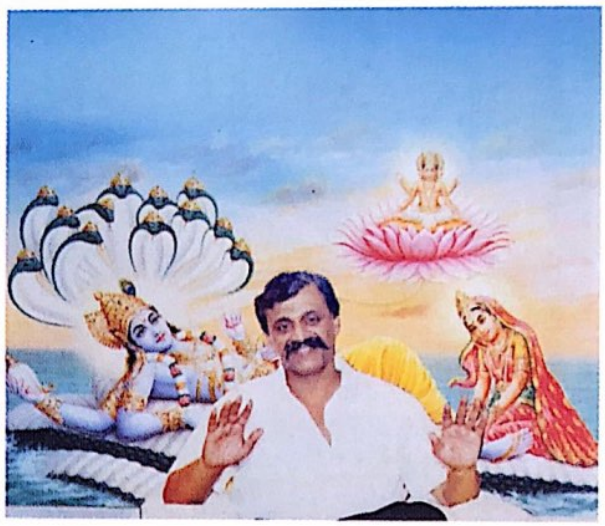

Scanned with CamScanner

राम विराम सुखद अभिरामा।
कलिमलभंजक अनिरुध नामा ॥२५॥
जगत में एक प्राणपती बापू।
तासु बिमुख किमी लह विश्रामू ॥२६॥

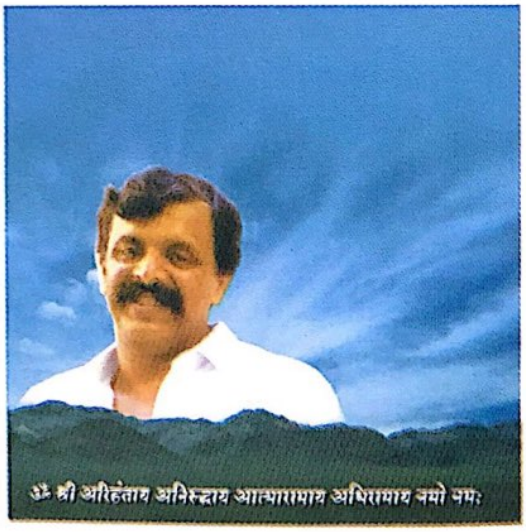

बापू नामसम बल कछु नाही।
रिपु बल नाश करइ छनमाही ॥२७॥
महापापी जब नाम सुमिरहि।
जोर अपार दुखसागर तरहि ॥२८॥

Scanned with CamScanner

निज इच्छा अनिरुध अवतरइ ।
धरम प्रेम आनंदन लागी ॥२९॥
सेवा करबे वो बड भागी ।
चरम कृपालु बापू अनुरागी ॥३०॥

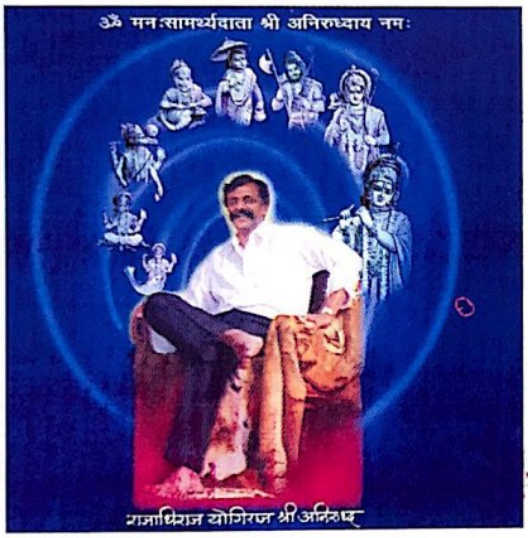

बापू नामबिनु करम अधूरा ।
श्रीदर्शन बिनु अन्न ही जहरा ॥३१॥
कोई मनोरथ बड मन माही ।
प्रयास करत पर फलवत नाही ॥३२॥

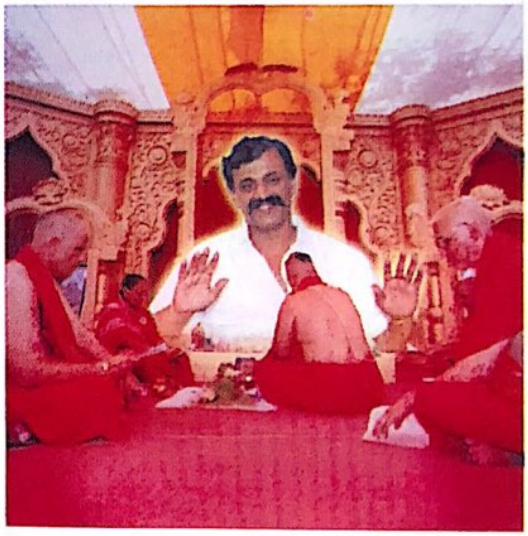

Scanned with CamScanner

धीर धरहु ना होऊ उदासा।
सब मिली जाऊ अनिरुधपासा ॥३३॥
अनिरुध नाम प्रफुल्लित गाता।
टरतहि पीड रोग दूर जाता ॥३४॥

देख चरण सुमंगलमूला।
जानऊँ बापू भगति अनुकूला ॥३५॥
परबत सम बडौ मम भागु।
घोर पाप मालिक अनुरागु ॥३६॥

Scanned with CamScanner

सदैव सरनागत हितकारी ।
करि रच्छण भवभयमलहारी ॥३७॥
बापू भगति को कहँऊ बखानी ।
सहज मार्ग जश पावहि प्रानी ॥३८॥

अनिरुध गावत पुलक सरीरा ।
गद्‌गद् बानी अँखी बह नीरा ॥३९॥
बापू चरणधूली मोहे अतिप्रेमा ।
तन मन धन सेवा द्रिढ नेमा ॥४०॥

Scanned with CamScanner

दोहा

अनिरुध चलीसा स्तोत्र यह इक मंत्र महान अपार।
सर्ब कामना पूरन प्रति व्यर्थ बचन ना जाय ॥
पिपा निरबुद्ध सहज जड, ना जानै जोग तप नेम।
बापू क्रिपा नहि पाँऊ तसि, जसि चरणन्ही प्रेम ॥

नंदापति अनिरुद्ध की जय
चक्रधर चिदानंद की जय
बोलो भाय दाँऊ सुचित की जय जय जय

Scanned with CamScanner